धें













मीभद्रा-ग्रह्न-मञ्जग्र हा प्राप्त भूगा गर्जन महाना विकास के पिन्या कि स्वास्त के पिन्या कि स्वास्त के स्वास के

म्-िक भाषी-विलाम भान-काल ५०नीयाः म्लेकाः

(०३ म पृष्य १० उ३ म्लेकाः)

भ्राभि-पृक्षिरित्ती-डीर्ज़ पृत्र-भिज्ञः पिनाकिनी। मिला-रूम्सुदुम् ग्रुं यावडा दुज्रीय-भज्जलभा॥०॥

भण् उत्तीर-छु-त् इं कभ्द-वेगवडी-म्ववैः। उवैद्मणं काभकेष्ठं काभाषी उद् वरुडे॥॥॥

भ एव विग्रें ह्या भूल-हुउँ,हि-गड़ा-हुवः। नानुंभि विग्रें ह्याः का क्षुं उनुल-विग्रः॥॥

एगउ (-काभ-कला-कारं नाहि-भूगं हुवः परभा। पर्य-पर्ममु काभाकु भन्ना-पी०भूपामुन्नामा

का भकेषिः भूउः भेऽयं का गल्यात्व गित्रकः। यद् का भ-त्रे एम् एतुना यन केन वा। भक्तात्वात्रिभ्यमुलंयात्वा दलिय केषिमः॥भ॥

वै एपेडा काभकेषु भिना भन्भिस ५ में वडभा। केए-वरू-दलनैव भुक्ति-लेकं म गम्ब्रिडाा ।।। रुर रुर मर्द्भर

ये वमेडा काभकेषु, भिना क्रणणं वा उद्यक्तका।
भूगृड भव-पापेष्टः भाकाद्या द्वित नगान् दिः॥॥
गायदी-भए पाणां छुना कि-भूग मृत्रभूमा।
पुत्रभार् प्रेम मिने विला क्षू प्रदिलणभा।
यदा नुद्य द्वा काभकेष्ठ मु विला क्षू प्रदिलणभा।
पद्य-भाषा-न्भण्य गे-गर्-स्ननं लक्डा॥॥॥
विश्व-का गण्-ने द्वा मुंगिशा-दिप्र-भून गीभा।
वज्ञका भूग-भंकर्गं काभावीं उपभकं कर्णा।०॥
प्रा-स्मादिन काष्ट्रं भुत्रभावीं उपभकं कर्णा।०॥
प्रा-स्मादिन काष्ट्रं भुत्र काभावीं उपभकं कर्णा।०॥
उद्या द्वा देव काभावीं केणि-पुर्य-द्वलं लक्डा॥०॥
उद्या द्वा देव विला काभावीं काभावी-मेवया।
दि-भूग-निलयं द्वा दि-विण काभावीं व्या प्रि-लिक्षण्-भयात्रं ।
प्रि-लिक्षण्-भयात्रं द्वा द्वा उभाम्या।०॥
य उद्या प्राप्त काम्यान काले प्राप्त विश्वा।
य उद्या प्राप्त काम्यान काले प्राप्त विश्वा।
य उद्या प्राप्त काम्यान काले प्राप्त विश्वा।

एगमुरुलभा मन्ग्रमन्मः

ारउन्दिर्द्ययाचाराउवा हिती हर्जुः भवभी हा गृथा प्रियम्भारं हितृन हुभा बाह्य रं लहरू भा इंद्रामाभुक्ता

> — नाराय"'भूिः **यारा-भूग्नभा** – गुक्'रा-भएंलभा, भ्रवङ्ग-भाजमीयु-मुम्न-धर्ष्ठी (1967-12-07)